Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2024: 8.058,
https://www.srjis.com/issues_data/233
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, APR-MAY 2024, VOL-12/63

नई तालीम आधारित शिक्षा में मूल्य संवर्धन की भूमिका

दीपेन्द्र बाजपेयी

पी-एच.डी. शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यलय वर्धा, महाराष्ट्र.

ई-मेल-deependrabajpayee@gmail.com

Paper Received On: 21 April 2024

Peer Reviewed On: 30 May 2024

Published On: 01 June 2024

Abstract

शिल्प केन्द्रित एवं अहिंसक समाज का निर्माण करना बुनियादी शिक्षा की मुख्य उद्देश्यिकी रही है। महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन से निर्मित हुई बुनियादी शिक्षा ना केवल विद्यार्थी जीवनौत्थान से संदर्भित है अपितु वह विद्यार्थी को समाज में एक कुशल मनुष्य के रूप संचरित होने का अवसर भी प्रदान करवाती है। मुख्यतः बुनियादी शिक्षा 7 से 14 वर्ष के विद्यार्थियों को अधिगमित एवं शिक्षित करने का शिक्षण अभिकल्प है। बुनियादी शिक्षा अधिगम के समानांतर ही मूल्य एवं कौशल विकास पर भी बल देती है। स्पर्धा के इस युग में मूल्य स्थापन, मूल्य परिवर्तन एवं मूल्यों को निर्मित करने के लिए बुनियादी शिक्षा एक प्रमुख स्तंभ है यदि हम मूल्य को बुनियादी शिक्षा के केंद्र में रखे तो हमें यह संज्ञान मिलेगा कि बुनियादी शिक्षा के अंतर्गत स्वलम्बिता, सत्यवादिता, कर्मठता, परिश्रमिक दृष्टिकोण एवं चारित्रिक संवर्धनिता पर बल दिया है जो यह स्पष्ट करता है कि यह शिक्षा व्यवस्था विकासात्मक मूल्य के अनुरूप तैयार की गयी है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि पुस्तकीय ज्ञान विद्यार्थी को नैतिक नही बना सकती है। बुनियादी शिक्षा क्रियात्मक दक्षता एवं कौशल पर भी बल देती है। गाँधी जी के विचारों के विद्यालयों में विशेष बल शिल्पकेंद्रिता पर ही दिया गया है उनके अनुसार बालक को दिया जाने वाला ज्ञान क्रियात्मकता एवं कौशल से परिपूर्ण होना चाहिए तभी विद्यार्थी कुशल जीवन की संकल्पना कर सकता है एवं राष्ट्र उत्थान में अपनी सहभागिता प्रदान कर सकता है। महात्मा गांधी जी कताई, बुनाई, हस्तशिल्प, चरखा, कुटीर उद्योग, प्राकृतिक कृषि आदि करने के लिए कौशल निर्माण पर बल दिया है। यह लेख मुख्य रूप से गांधी जी के द्वारा विद्यार्थियों के कौशल एवं मूल्य संवर्द्धन पर दिए गये विचारों पर केन्द्रित है।

***मुख्य बिंदु** – स्वलाम्बिता, कौशल, बुनियादी शिक्षा, मूल्य संवर्द्धन।*

प्रस्तावना

शिक्षा समाज की नींव है। हम जैसा समाज गढ़ना चाहते है, हम वैसा ही नागरिक बनाना चाहते है। इसी के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था भी बनाते है। अगर देश गुलामों का बनाना चाहते है तो गुलामी को महामंडित करते है। इसी प्रकार अगर कर्मचारियों का देश निर्मित करना चाहते है तो नौकरों की मानसिकता गढ़ते है। जब सभ्यता, समानता एवं मानवीय समाज का सपना देखते है तो हमें शिक्षा को

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

उन्हीं सांचों में गढ़ना होगा। जिनके पास समाज दृष्टि, शिक्षा दृष्टि हो। महापुरुष महात्मा गाँधी द्वारा एक अभिकल्पित, संरचित, संगठित हिन्द स्वराज्य का सपना था। जिसे सार्थक एवं सत्य दृष्टि के रूप में स्थानिक करने के लिए एक शिक्षा व्यवस्था थी जिसका नाम नई तालीम या बुनियादी शिक्षा दृष्टि है। शिक्षा क्षेत्र में पाश्चात्य आधुनिक युग का सूत्रपात जॉन रूसो के विचारों से तथा समकालीन युग की आधारशिला शिक्षा दार्शनिक जॉन डीवी के शिक्षा प्रयोगों ने रखी। वही भारतीय समाज में औपनेवेशिक शासन प्रणाली के अंतर्गत बनाई गई शिक्षा प्रणाली रूसो के पूर्व आधुनिक वैचारिक ढांचे के इर्द-गिर्द निर्मित हुई। यह शिक्षा व्यवस्था भारतीयों को शिक्षित न करके कार्यालयों में बाबु बनाने की फैक्ट्री के रूप में कार्य कर रही थी। 1937 में वर्धा सम्मेलन में जब गाँधी जी के द्वारा नई तालीम की अवधारणा दृष्टि प्रस्तुत की गई तब समाज विचारकों, आलोचकों, शिक्षाविदों आदि को भारतीय संस्कृति से निर्मित एक शिल्पकेन्द्रित शैक्षिक व्यवस्था से परिचित होने का अवसर मिला। डॉ जाकिर हुसैन ने नई तालीम की आलोचना जॉन डीवी के प्रोजेक्ट मेथेड के समानांतर बनाकर की है।

महात्मा गाँधी के विचारों में नई तालीम

महात्मा गाँधी का जीवन अपने आप में दर्शन के विभिन्न क्षेत्रों को परिभाषित करता है। उनके जीवन दर्शन पर ध्यान केन्द्रित किया जाय तो हम पायेंगे कि गाँधीजी द्वारा समाज के प्रति दिए गए उनके सामाजिक विचारों में सत्य, अहिंसा, समता, समानता, समवाय, स्वालंबिता, निर्भीकता जैसे संप्रत्यय समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते है। जो भारतीय जीवन को एक ऐसा परिवेश प्रदान करेगा जिससे हमारा समाज एक नई जीवन की संभावना के अवसर प्रदान कर सकें। गांधीजी के जीवन दर्शन के केंद्र में आदर्शवाद, आवरिणक रूप में प्रकृतिवाद एवं समाजिक रूप में यथार्थवाद तथा अस्तित्ववाद के विचारों का दर्शन रहा है। गांधीजी भारतीय शिक्षा को द ब्यूटीफुल ट्री के रूप में संदर्भित करते है। उसके पीछे का कारण गांधीजी ने बताया कि आज तक उन्होंने शिक्षा के बारे में जो कुछ भी पढ़ा-समझा उससे यह अर्थ निकलता है कि भारत में शिक्षा सरकार के बजाएं समाज के अधीन है। गांधीजी के उक्त व्यक्तव्य द ब्यूटीफुल ट्री के शब्दों को लेकर धर्मपाल ने अपना शोध कार्य किया और उसमें यह बताया कि जिस प्रकार अंग्रेजी सरकार ने न केवल हमारे अर्थशास्त्र और कुटीर उद्योग को समाप्त किया अपितु सम्पूर्ण अर्थतंत्र कप गर्त में डाल दिया। जिसके फलस्वरूप भारत का साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक पतन होने लगा है (रौतेला, 2018) तत्वोगत्वा भारत अपना भारतपन भुलकर अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था की आवोभगत में लग गया। महात्मा गाँधी के शब्दों में शिक्षा का अर्थ है कि बालक और मनुष्य के शरीर, मष्तिष्क और आत्मा में पाएं जाने वाले सर्वोतम गुणों का चौमुखी विकास करना है (सिंह, 2020) नई तालीम राष्ट्रीय समता

संस्कृति के समीप स्थान रखती है। साथ ही साथ सामुदायिक जीवन के आधारभूत व्यवस्थाओं से जुड़ी हुई भी है जिसे गाँधीजी ने केंद्र में रखा तथा एक नई शिक्षा व्यवस्था का सूत्रपात किया।

नई तालीम शिक्षा के उद्देश्य

महापुरुष महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन में शिक्षा के द्विमुखी उद्देश्य है। इसके एक मुख पर तात्कालिक उद्देश्य तथा दुसरे मुख पर अंतिम उद्देश्य या मोक्ष प्राप्ति को रखा है। गांधीजी शिक्षा के तात्कालिक उद्देश्य संदर्भित करते हुए कहते है कि शिक्षा के उद्देश्य हमरे तात्कालिक या हमारे दैन्दिनीय जीवन के उद्देश्यों को पूर्ण करनेवाली होनी चाहिए। जिससे जीविकोपार्जन या भाव सार्थकता मुख्य केंद्र बिंदु है। गांधीजी मानते है कि सम्पूर्ण देश की मुख्य समस्या जीविकोपार्जन करना एवं रोजी-रोटी कमाना है। यदि शिक्षा के माध्यम से हम इन दो समस्याओं का समाधान करते है तो हम समाज का कुशल निर्माण कर पायेंगे। गांधीजी के शब्दों में शिक्षा बच्चों के लिए बेरोजगारी के विरुद्ध बीमा होनी चाहिए। गांधीजी समाज में चारित्रिक उद्देश्यों को भीशिक्षा के अंतर्गत स्थान देते है। उनके अनुसार समस्त ज्ञान का लक्ष्य चारित्रिक ज्ञान का निर्माण होनी चाहिए। इसके अंतर्गत साहसिकता, विश्वास, की शक्ति, सरलता, शुद्धता, आत्मनियंत्रण, मानवीय सेवाकार्य आदि नैतिक गुणों का समागम होना चाहिए। गांधीजी के शब्दों में शिक्षा चरित्र पवित्रता के बिना व्यर्थ है। केवल बच्चे का पूर्ण विकास करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नहीं है बल्कि सर्वतोमुखी विकास करना है। सर्वतोमुखी विकास से तात्पर्य बुद्धि, हृदय तथा हस्तकर्म का विकास करना है। मानव न केवल बुद्धि है ना ही पशुतुल्य शरीर है, ना ही दिल ना ही आत्मा; मनुष्य की पूर्णता इन सभी का उपादेयता एवं संतुलन रूप में प्रयोग करना है। इस प्रकार की शिक्षा की कल्पना महात्मा गाँधी करते है। गाँधी द्वारा 11 सितम्बर 1937 के लिखे हरिजन में कहा कि शिक्षा वह है जो बच्चों की आध्यात्मिकता बौद्धिक तथा शारिरिक योग्यता को प्रेरित करती है। गांधीजी शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्यों का वर्णन करते हुए कहते है कि व्यवसाय को ही जीवन का उद्देश्य मानना हमारी जीवन सबसे बड़ी भूल है। बिना संस्कृति के समाज की कल्पना करना संभव नहीं है। संस्कृति ही जीवन की आधारशिला तैयार करती है एवं शिक्षा उस आधारशिला का मार्ग प्रशस्त करती है। गांधीजी अपने शब्दों में लिखते है कि मैं शिक्षा में साक्षरता की अपेक्षा सांस्कृतिक तत्व को अधिक महत्व देता हूँ। सांस्कृति प्रारम्भिक एवं नई वस्तु है जिसे विद्यार्थियों को स्कुल से प्राप्त करनी चाहिए। यह उद्देश्य भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता एवं संज्ञानता पर बल देता है। जिससे मनुष्य में अहंकार, पक्षपात, प्रतिविकृत आदि समाप्त हो सकें। गांधीजी का अंतिम उद्देश्य आध्यात्मिकता एवं मोक्ष को मानते है। जो सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के सार में निहित है। शिक्षा के अंतिम उद्देश्य के रूप में आत्मनुभूत, स्वालम्बिता, ईश्वरीय ज्ञान आदि को केंद्र में रखते है। जिसके माध्यम से मनुष्य अपने चराचर समस्याओं का समाधान कर सकता है।

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

नई तालीम शिक्षा पद्धति के प्रमुख सिद्धांत

- **अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा** – 7 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जाए। इस शिक्षा की कुल अवधि 7 वर्ष की गयी थी।
- **शिल्प आधारित शिक्षा** – बुनियादी शिक्षा में सम्पूर्ण शिक्षा का संबंध आधारभूत शिल्प से होता है। चुने हुए शिल्प की शिक्षा देकर विद्यार्थियों को अच्छा शिल्पकार बनाकर स्वालम्बी बनाने पर जोर दिया गया है। शिल्प के सामाजिक व वैज्ञानिक महत्व को समझाने का प्रयास किया जाता है। छठवीं और सातवीं कक्षाओं में बालिकाएं आधारभूत शिल्प के स्थान पर गृहविज्ञान ले सकती है।
- **शारिरिक श्रम** – शारिरिक श्रम को महत्व दिया गया है ताकि विद्यार्थी श्रम के प्रति सजग और सम्मानजनक भाव रख सकें।
- **स्वालम्बी शिक्षा** – स्वालम्बी शिक्षा बालकों के जीवन, घर, ग्राम तथा ग्रामीण उद्योगों, हस्तशिल्पों और व्यवसाय घनिष्ट रूप से संबंधित हों। बालकों द्वारा बनाई गई वस्तुएं जिनका प्रयोग कर सकें एवं उनको बेचकर विद्यालय के उपर कुछ व्यय कर सकें। इससे विद्यार्थियों में स्वालम्बन की भावना का विकास होता है।
- **मातृभाषा में शिक्षा** – शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है। बालक तथा बालिकाओं के लिए मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा का अध्ययन कराने पर जोर दिया गया है।
- **आदर्श नागरिक** – बुनियादी शिक्षा एक सशक्त भारत बनाने की दिशा के लिए एक आदर्श नागरिक तैयार करने पर बल देती है।
- **मुक्त वातावरण में शिक्षा** – भय मुक्त और आनंदमयी शिक्षा की व्यवस्था की गई है।
- **सह शिक्षा** – पाँचवीं तक सह-शिक्षा है और बालकों एवं बालिकाओं का समान पाठ्यक्रम रखा गया है। छठी कक्षा के बाद पश्चात् बालकों और बालिकाओं के लिए पृथक विद्यालयों की व्यवस्था है।
- **पाठ्यक्रम** – पाठ्यक्रम का स्तर वर्तमान मैट्रिक के समकक्ष हो एवं पाठ्यक्रम में अंग्रेजी और धर्म की शिक्षा नहीं दी गई है। सातवीं और आठवीं कक्षाओं में संस्कृत, वाणिज्य, आधुनिक भारतीय भाषाओँ आदि की शिक्षा व्यवस्था है।

नई तालीम विद्यालय की समय सारणी

नई तालीम के विद्यालयों में प्रतिदिन 5 घंटे कार्य होता है जो निम्नानुसार है –

क्र.सं.	विषय	समय
1.	**आधारभूत शिल्प**	**3 घंटे 20 मिनट**
2.	**मातृभाषा**	**40 मिनट**
3.	**संगीत, चित्रकला और गणित**	**40 मिनट**
4.	**सामाजिक अध्ययन और समान्य विज्ञान**	**30 मिनट**
5.	**शारिरिक शिक्षा**	**10 मिनट**
6.	**अल्पावकाश**	**10 मिनट**

बुनियादी शिक्षा में मूल्यों की पृष्ठभूमि

बुनियादी शिक्षा नियमबद्ध एवं मूल्यों के अनुरूप तैयार की गई एक शिक्षा प्रणाली है। जिसमें गांधीजी द्वारा बताएँ गए सभी प्रकार के नियमों एवं मूल्यों को रखा गया है। ये मूल्य ना केवल शिक्षा व्यवस्था को अपितु जीवनशैली एवं समाजिकता दोनों को प्रभावित करते है। गांधीजी अपने सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि मूल्यों के अतिरिक्त विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, स्वालंबिता, सामाजिक समभाव, अनुशासनता पर बल दिया।

- **आत्मनिर्भरता** – गांधीजी का चिंतन भविष्योन्मुखी था जिसके कारण उनके विचारों एवं अभिव्यक्ति में आत्मनिर्भरता की झलक विद्यमान थीं। वः पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा ज्ञान के व्यवहारिक पक्ष पर अधिक बल देते थे। उनका मानना था कि बालक से परिवार, परिवार से समुदाय, समुदाय से गाँव, गाँव से राज्य और उनके राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। यही कारण है कि गाँधी जी ने नई तालीम आधारित शिक्षण व्यवस्था में विद्यार्थियों को दिये जाने वाले समग्र ज्ञान को व्यवहारिक रूप से प्रसारित करने तथा प्रायोगिक समझ विकसित करने पर बल दिया है। यह ज्ञान केवल अक्षरीय ज्ञान न होकर विद्यार्थीजन को आत्मनिर्भर बनाएगा जिसमें स्वयं अपनी जीविकोपार्जन कर सकता है एवं समाज के उत्थान में अपना प्रमुख योगदान दे सकता है।
- **स्वालंबिता** – गाँधी जी के अनुसार रोजगार से जुड़ जाना ही स्वंय का एवं देश का विकास करना नहीं है। अपितु गाँधी जी एक ऐसे शिक्षा न होकर स्वआश्रित बनने का प्रयास करें। यहाँ पर गाँधी जी दो प्रकार के आश्रय को तात्कालिक शिक्षा व्यवस्था से जोड़ना चाहते थे। जिसमें से एक आश्रय ब्रिटिश प्रशासन के प्रति तथा दूसरा मशीनी उत्पादों के प्रति होने वाले आश्रय का विरोध करने पर

बल देते हुए। भारतीय समाज के विद्यार्थियों एवं शिक्षा व्यवस्था के अभिकल्पित रूप को स्वालंबिता के अनुरूप तैयार करने का प्रयास किया। उनके अनुसार स्वालम्बी होने का अर्थ मनुष्य का कर्म के प्रति संपूर्ण समर्पण है। यदि मनुष्य कर्म को सही रूप से अपनाता है। वः न केवल अपनी समस्याओं का समाधान करने में सफल होगा। साथ ही साथ अपने परिवार एवं समाज में स्वालम्बी जीवन-यापन करने में भी सक्षम होगा। स्वालम्बन से तात्पर्य अधीनता के प्रति विमुक्तक रूप से है। जहाँ विद्यार्थीगण बिना किसी दबाव के अपने ज्ञान एवं दक्षता के अनुरूप स्वंय जीविकोपार्जन कर सकता है।

- **ब्रह्मचर्य** – गाँधी जी विद्यार्थी जीवन को कर्मठ जीवन मानते है। उनके अनुसार विद्यार्थी का जीवन ब्रह्मचर्यता के अनुरूप संचालित होना चाहिए। इसीलिए गाँधी जी ने अपने शैक्षिक विचारों में ब्रह्मचर्य के माध्यम से इन्द्रिय नियंत्रण, चित्त स्वच्छता, समभावना एवं कार्यशीलता को बढाने पर बल दिया है। गाँधी जी के अनुसार विद्यार्थी जीवन ब्रह्मचर्य के साथ प्रारंभ होनी चाहिए एवं एक निश्चित समय के पश्चात इसमें प्रवीणता प्राप्त कर लेनी चाहिए।
- **अनुशासनता-** गाँधी जी मुक्ताय्क्तम अनुशासन पर बल देते थे। उनके अनुसार बालक जो कुछ भी सीखता है वः प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण में रहकर सीखता है। इसीलिए उसे स्वतंत्र रूप से सीखने देना चाहिए। वह परिस्थिति अनुरूप स्वंय ही आत्मनुशासितहो जायेगा। गांधी जी व्यक्तिगत अनुशासन का निषेध करते हुए सामाजिक अनुशासन पर बल देते है। उनके अनुसार विद्यार्थी को समाज में बनाएं गये नियमों को समझना एवं उपयोग करना चाहिए तभी वह एक सफल सामाजिक प्राणी बन पायेगा।

बुनियादी शिक्षा में कौशल की रुपरेखा

गाँधी जी मुख्यतःविद्यार्थी को उसका सबसे बड़ा आभूषण उसके कौशल को मानते थे। कौशल ही वह गुण है जो विद्यार्थियों को स्वालम्बी, आत्मनियंत्रण, आत्मनिर्भर एवं सामाजिक बनाता है । फलस्वरूप गाँधी जी ने नई तालीम के अंतर्गत समवाय पद्धति/ शिल्पकेन्द्रित शिक्षा, औद्योगिक कौशल, सृजन कौशल आदि प्रमुख बल दिया है।

- **समवाय पद्धति** – जैसा कि सर्वविदित है कि नई तालीम पद्धति का केन्द्रक दस्तरकारी है। फलस्वरूप बालक को प्रारंभ के वर्षों में हाथ के कार्य कराएँ जाय। जिससे वः सेवा निष्पादन कुशल हो जाता है। दस्तरकारी के माध्यम से वः प्राकृतिक परिवेश से भी जुड़ने में सफल होता है। गाँधी जी के द्वारा यह देखा गया कि गांवों में हाथ से काम करने की प्रथा तो प्रचलित है। परंतु उस ज्ञान को आपस में एक दुसरे तक पहुँचाने का कोई माध्यम विद्यमान नहीं है। फलस्वरूप

दस्तरकारी प्रथा अपने पतन की ओर बढ़ रही है। नई तालीम के माध्यम से गणित, विज्ञान, भाषा में दस्तरकारी को जोड़ दिया जिससे वह बौद्धिक ज्ञान शीलता और हाथ का कर्म दोनों ही सामान्य रूप से संचालित होने लगी। दस्तरकारी को शिक्षा के केंद्र में रखने का मुख्य उद्देश्य ज्ञान और कर्म का भेद मिटाना है। साधन और साध्य की शुद्धता को कायम रखना है तथा स्थानीय स्थानीय ज्ञान के अनुरूप कौशल को विकसित करना है। नई तालीम में केवल कक्षा के भीतर शिक्षा प्राप्त करने के बजाएं समाज में क्या हो रहा है? का भी शिक्षण कराएँ जाने का विचार किया गया है। गाँधी जी के अनुसार विद्यार्थियों को वैज्ञानिक एवं गणितीय ज्ञान कराने के पश्चात् उन्हें उनका अवलोकन ही कराया जाना चाहिए। जिससे बच्चों में प्रयोग करने के प्रति उत्साह और जिज्ञासा उतपन्न होगी है। गाँधी जी के अनुसार रंगाई, सूत कातना, खेती करना, कताई, चरखा चलाना आदि कार्यों को शिक्षा के साथ जोड़ा है। यही कारण है कि नई तालीम एक समीक्षात्मक समतुल्य है जिसके मूल में ही शिल्प है।

- **औद्योगिक कौशल** – गाँधी जी कार्ल मार्क्स के विचारों का समर्थन तो नहीं करते है परंतु औद्योगिकीकरण के विरुद्ध भी नही है। उनके अनुसार विद्यार्थियों को नई तालीम की शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत औद्योगिक कौशल के लिए इंटर्नशिप की व्यवस्था की जाने पर बल दिया है। वर्तमान संदर्भ में बनाई गई शिक्षा नीति 2020 में भी औद्योगिक कौशल को बढ़ाने एवं जागरूक करने के लिए इंटर्नशिप एवं वोलेंटियरिज्म पर भी बल दिया गया।
- **सृजन कौशल** – गाँधी जी द्वारा विद्यार्थियों के सृजनात्मक कौशल को विकसित करने पर अधिक बल देते है क्यूंकि सृजन से ही समाजोत्थान संभव है। गाँधी जी का कला, सामाजिक विज्ञान, गणित, हिंदी आदि सभी पाठ्यक्रमों में सृजन से संबंधित पाठ्यक्रमों को निर्मित करने एवं शिक्षकों के द्वारा शिक्षण में सृजनात्मक दक्षता के अवलोकन पर बल देने का सुझाव देते है। उनके अनुसार बालक सृजनशीलता के द्वारा स्वंय का निर्माण कर सकता है एवं वः नये रोजगार ज्ञान एवं अविष्कार की ओर बढ़ सकता है।
- **भाषायी कौशल** – गाँधी जी के अनुसार शिक्षा, मातृभाषा, हिंदी तथा स्थानीय भाषा के साथ शिक्षण करने पर बल देते है। इसके अतिरिक्त गाँधी जी किसी भी भाषा का निषेध करने के पक्ष में नहीं है परंतु वह मात्र भाषा को सम्पूर्ण भारत में विकसित करने के पक्षधर है। वह विद्यार्थियों में हिंदी के अतिरिक्त उनके स्थानीय भाषा को भी रखने पर राष्ट्र को समझा जा सकता है। इसलिए विद्यार्थियों को उनके स्थानीय भाषा के बारे में समझ विकसित करना होगा।

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

निष्कर्ष

उपभोक्तावादी संस्कृति के अनुरूप दी जाने वाली शिक्षा सदैव ही विनाशकारी समाज को निर्मित करती है। अतः शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को एक ऐसी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जो व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ने का कार्य करें। अपने राष्ट्र को जानने में सहायक हो सकें। फलस्वरूप नई तालीम/बुनियादी शिक्षा को वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिक समझा जा सकता है क्यूंकि भारतीय परंपरा एवं संस्कृति को समझे बिना राष्ट्र का कुशल निर्माण नहीं हो सकता है। इसीलिए नई तालीम को वर्त्तमान के चश्मे से लगाकर देखना चाहिए। तभी समाज का उत्थान हो सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

रौतेला, के. एस. (2018). गांधी जी का शिक्षा दर्शन क्या है ? गाँधी जी के शैक्षिक विचारों का वर्णन कीजिए? यंगविल्ड्स ब्लाग, उत्तराखंड।

सिंह, एस. (2000). महात्मा गांधी एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन, [पी-एच.डी. शोध प्रबंध]. शिक्षा संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस.

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language